कपास की फसल में नाशीजीव चेतावनी एवं प्रबंधन सलाह (जालना, महाराष्ट्र)

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केंद्र, नई दिल्ली की कपास टीम द्वारा 1-3 अगस्त 2018 के दौरान जालना (महाराष्ट्र) में कपास खेतों का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में पाया गया कि कपास की फसल स्क्वायर (डोडी) बनने एवं अगेती फसल में पुष्प बनने की अवस्था में है पुष्पावस्था में गुलाबी सुंडी का प्रकोप (रोसेट फ्लावर) आर्थिक छति स्तर से अधिक है। जेसिड (तुडतुडे) की संख्या सभी स्थानों पर कुछ खेतों को छोड़कर आर्थिक क्षति स्तर के निकट है। कुछ खेतों में एफिड (मावा) भी है। सफ़ेद मक्खी एवं थ्रिप्स की संख्या आर्थिक छति स्तर से कम है इसके अलावा अधिकतर खेतों में चूसक कीटों के प्राकृतिक शत्रु जैसे शिकारी मकड़ी के जाल, क्रैसोपर्ला के अंडे, लार्वा एवं वयस्क एवं लेडी बर्ड बीटल काफी संख्या में पाए गए हैं।

उपरोक्त परिस्थित को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है

- ✓ **खेतों की लगातार निगरानी जारी रखें।**
- ✓ **गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप (काम गंध सांपडे) 2 प्रति एकड़ लगायें अथवा अधिक मात्रा में पतंगे पकड़ने हेतु फेरोमोन ट्रैप (काम गंध सांपडे) 16 प्रति एकड़ लगायें।**
- ✓ **गुलाबी सुंडी से छतिग्रस्त पुष्पों को तोड़कर सुंडी को नष्ट करें।**
- ✓ **गुलाबी सुंडी से बचाव के लिए अज़दिराक्तिन (1500 पी पी एम्) 5 मिली प्रति लीटर पानी के साथ स्प्रे करें।**
- ✓ **जिन बी टी कपास के खेतों में सफ़ेद मक्खी (8/पत्ती) एवं हरा तेला (2/पत्ती) की संख्या आर्थिक क्षति स्तर पर पहुँच गयी है वहां पर किसान फ्लोनिकमिद 50 डब्ल्यू जी 60 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ स्प्रे करें।**
- ✓ **हमेशा ध्यान रखें कि एक कीटनाशी का फसल अवधि के दौरान दुबारा प्रयोग न करें।**
- ✓ **घातक कीटनाशी जैसे, प्रोफेनोफोस, एथिओंन आदि का प्रयोग कदापि न करें क्योंकि इनके प्रयोग से मित्र कीट भी मर जाते हैं और नाशीजीवों का प्रकोप बढ़ जाता है।**

****